Baal Hanuman Ramayan Mandali-Navua

Hawan Book

Arya Samaj Hawan Edition

Baal Hanuman Ramayan Mandali©

आचमन

इन मंत्रो के साथ अपने दाए हाथ में तीन बार जल लेकर पी ले।

ॐ अमृतो पस्तरनमसी स्वाहा॥

ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा॥

ॐ सत्यम यशह शरीर मई श्रीह श्रयतां स्वाहा॥

अंग स्पर्श

अपने बाएं हाथ में जल लेकर अपने दाएं हाथों के अंगूठे और बीच वाले ऊँगली से जल को छूकर के इन मंत्रो द्वारा अलग अलग अंगों को स्पर्श करे।

ॐ वांग में आस्ये अस्तु॥ (होट)

ॐ नसोर में प्राणों अस्तु॥ (नाक)

ॐ अक्ष्णोर में चक्षुर अस्तु॥ (आँखें)

ॐ कर्णयोर में श्रोतं अस्तु॥ (कानो)

ॐ बहोर में बालम अस्तु॥ (काँधे पर)

ॐ ऊरोर में ओजो अस्तु॥ (जांघों पर)

ॐ अरिष्ठानी मंगानी तनुस तन्वा में सहा सन्तु॥ (पूरे अंगो में)

अग्नि प्रजौलित करे:

ॐ भूर भुवः स्वः

अब पवित्र अग्नि को तीन बार घुमा कर हवन कुंड में छोड़ दे।

ॐ भूर भुवः स्वर द्यौरिवा भूमना पृथिवीवा वारीमा .

तस्यास्ते पृथिवी देवयजनी!

पृष्ठे अग्नि

माननाद माननाद्याया दधे ॥

Om bhoor bhuwah swar dyauriva bhoomnaa
prithiveeva varimaa.
Tasyaaste prithivi devayajani!
Prishthe agni
mannaa damannaa dyaayaa dadhe

अब आम के झरे लकड़ियां जोड़ दे अग्नि में और अच्छी तरह से अग्नि को जला दे।

ॐ उद्बद्य स्वाग्ने

प्रतिजाग्रही त्वमिष्ठा पुरते

समसृजे था मयं च

अस्मिंतय धसथे अध्युत तरस्मिं

विश्वे देवा यज मानष च सीदता॥

Om udbudhya swaagne
pratijaagrihi
twam ishtaa poorte
samsrije thaa mayan cha.
Asmiintsa dhasthe adhyut tarasmin
vishwe devaa yaj maanash cha seedata.

समिधाय

*पहला **समिधाय:***

तीन समिधाय अर्पण करे:

ॐ ायन्ता िधमा आत्मा

जातवेदस तेनेध्यस्वा चड्ढा

वर्धय चास्मां प्रज्ञा

पशुभिर ब्रह्मा

वर्चसे नाना दएंा

समधय स्वाहा

इदं अग्नये , जाते वेड्स , ीदन्ना ममः

*दूसरा **समिधाय:***

ॐ समिधाग्निं दुवस्यत

घृतैर बढ़ाया ता तिथीम

आसमीन हव्या जुहोतनह स्वः

इदं अग्नये, ीदन्ना ममः

तीसरा समिधाय:

ॐ सुसमिधाय शोचिशे

घृतं तीव्रतम जुहोतनहा

अग्नये जाता वेड्स स्वाहा .

इदं अग्नये, जातवेदसे, ीदन्ना ममः

चौथी समिधाय

ॐ तनतवा समीद भिरंगिरो

गृतें ा वध यामसी

बृहच छोचा हिविष्ठ्या स्वाहा .

इदं अग्नये अंगिरस ीदन्ना ममः

पंचा घृत आहुति

पांच घी की आहुति मन्त्रों द्वारा हवन कुंड में डाले:

ॐ अयंत ीधमा आत्मा

जात वेदस्तेनेध्यस्वा

चेद ध वर्धय चासमान प्रज्ञा पशुभिर ब्रह्मा

वर्चसे नान नया

दएं ा समधय स्वाहा .

इदं अग्नये , जाते वेड्स , ीदन्ना मम .

चार घी को अग्नि में चदय इन मन्त्रों द्वारा:

ॐ अग्नै स्वाहा

इदं अग्नये, दन्ना ममः

ॐ समाया स्वाहा.

इदं समाया, ीदन्ना ममः

ॐ प्रजापतये स्वाहा

इदं प्रजा पतये, ीदन्ना ममः

ॐ इन्द्राय स्वाहा .

इदं इन्द्राय, ीदन्ना ममः

अब इन मंत्रों द्वारा हवन समग्रि की आहुति दे:

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि ।
मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥१॥
भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाःस्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥२॥
वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्काररूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥३॥
सीताराम गुणग्राम पुण्यारण्य विहारिणौ ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कबीश्वर कपीश्वरौ ॥४॥
उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥५॥
यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥६॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यः धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात

ॐ त्रियम्बकं यजामहे, सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मोक्षिय मामृतात्